PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 2, ISSUE 2

भीष्म साहनी की कहानियों में कथ्य-वैविध्य

डॉ. भरत. ए. पटेल
हिन्दी विभाग
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज
सारोली **(उत्तर गुजरात)**

भीष्म साहनी स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य जगत के मंजे हुए और प्रसिद्ध कथाकार हैं । उन्होंने लेखन की शुरुआत कहानी से की थी , पर बाद में उन्होंने उपन्यास और नाटक भी लिखे । 'झरोखे' , 'कड़ियाँ' , 'तमस' , 'बसंती' , 'मय्यादास की माड़ी', 'कुन्तो' आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं । 'हानूस' , 'कबिरा खड़ा बाजार में ' , 'माधवी' , 'मुआवजे', 'रंग दे बसंती चौला' आदि उनके महत्वपूर्ण नाटक हैं । 'भाग्यरेखा' , 'पहला पाठ ' , 'भटकती राख ' , 'पटरियाँ ' , ' वाङ्ग्चू ', 'शोभा-यात्रा ', 'निशाचर ' , 'पाली ', 'डायन ', 'प्रतिनिधि कहानियाँ ', 'चर्चित कहानियाँ ' उनके प्रसिद्ध कहानी-संग्रह हैं ।

भीष्म साहनी एक ऐसे युगचेता साहित्यकार हैं ,जिन्होंने अपने समय की विभिन्न समस्याओं , व्यापक जीवनानुभावों एवं संवेदनशील घटनाओं को अपनी कहानियों का विषय बनाया है । यही कारण है कि उनकी कहानियों में विषय और कथ्य की विविधता देखने को मिलती है । उनकी कहानियों में स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश साहजिकता और मार्मिकता के साथ जीवंत हो उठा है ।

'चीफ की दावत ' भीष्म जी की लोकप्रिय कहानियों में से एक है। इस कहानी में एक ओर आधुनिक सभ्यता और स्वार्थपरता पर व्यंग्य किया है ,वही दूसरी ओर अपने बेटे द्वारा अपमान सहकर भी बेटे की तरक्की की कामना करनेवाली माँ का संवेदनापूर्ण चित्र प्रस्तुत किया गया है । मिस्टर शामनाथ अपने चीफ ऑफिसर को दावत पर बुलाकर प्रसन्न करके तरक्की पाना चाहता है । चीफ के साथ दूसरे अधिकारी और उनकी औरेतें भी आनेवाली थीं ।

उनके खानेपीने की व्यवस्था तो अच्छी तरह से कर दी गई , पर प्रश्न उठता है - माँ का क्या होगा ? पति-पत्नी भरसक कोशिश करते हैं कि मेहमानों से माँ को छिपाया जाय । पीत-पिलाते ही साढ़े दस बज गये । बरामदे से गुजरते समय चीफ और अन्य मेहमानों का कुर्सी पर बैठकर सो रही माँ से साक्षात्कार हो जाता है । शामनाथ का हृदय बैठने लगता है ,पर चीफ कहता हैं कि मुझे गाँव के लोग बहुत पसंद है । चीफ को माँ की पुरानी फुलकारी पसंद आ जाती है । शामनाथ माँ से नई फुलकारी बनवाकर देने का वादा करता है । माँ दु:खी हृदय से हरिद्वार चले जाने की ईच्छा प्रकट करती है ,लेकिन बेटा अपने स्वार्थवश माँ को रोक लेना चाहता है - " तुम चली जाओगी तो फुलकारी कौन बनाएगा ? साहब से तुम्हारे सामने ही फुलकारी देने का इकरार किया है ।

मेरी आँखें अब नहीं है बेटा ,जो फुलकारी बना सकूँ । तुम कहीं और से बनवा लो । बनी बनायी ले लो ।

माँ ,तुम मुझे धोखा दे यूँ चली जाओगी ? मेरा बनता काम बिगाड़ोगी ? जानती नहीं , साहब खुश होगा तो मुझे तरक्की मिलेगी ? " [१] बेटे की तरक्की की बात सुनकर माँ के चेहरे का रंग बदलने लगता है । झुर्रियों भरे चेहरे पर चमक आने लगती है । वह बेटे की तरक्की की खुशी में उसी बेटे द्वारा किये गये अपमानजनक व्यवहार को भूलकर फुलकारी बनाने के लिए राजी हो जाती है - " तो मैं बना दूँगी ,बेटा ,जैसा बन पड़ेगा बना दूँगी । " [२] लेखक ने यहाँ बेटे-बहू द्वारा अपमानित और तिरस्कृत होते हुए भी बेटे के उज्जवल भविष्य की कामना करनेवाली ,ज्योतिहीन आंखो से भी फुलकारी बनाने का वादा करनेवाली माँ का हृदय छू जानेवाला मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया हैं । " माता-विमाता "कहानी भी ऐसी ही संवेदना को लेकर लिखी गई है , जिसमें जन्म देनेवाली और दूध पिलानेवाली स्त्रियों के मातृत्व की झाँकी दिखाई गई है |

' खिलौने ' भीष्म जी की प्रसिद्ध कहानी है , जो दिल्ली जैसे महानगर में समय के पीछे भागती , दौड़ती , हाँफती यंत्रवत जिंदगी की वास्तविकता को बखूबी उकेरती है | आधुनिक युग में समय और धन के अभाव में मनुष्य अपनी सारी संवेदनाओं और भावनाओं को

कुचलकर मशीनवत जिंदगी जीने को अभिशप्त है । ' एक की कमाई से पूरा नहीं पड़ता '-यह आधुनिक मुहावरा स्त्री और पुरुष दोनों को कमाने के लिए मजबूर करता है। इसमें सबसे ज्यादा दयनीय हालत बच्चों की होती है । माँ -बाप पूरा दिन बाहर रहते हैं और स्कूल से लौटकर घर में या पड़ोस में अकेले ,भूखे ,प्यासे जीने को अभिशप्त हैं । घर आये मेहमान छोटे से पप्पू के लिए खिलौना लाये थे ,पर माँ-बाप उसे खिलौना नहीं देना चाहते थे । कारण यह था कि वह खिलौना खेलता रहेगा तो देर रात तक सोयेगा नहीं ,सवेरे जल्दी उठ नहीं पाएगा । माँ-बाप को नौकरी पर जाने में देर हो जाएगी | इसलिए पिता दिलीप कहता है - " नहीं पप्पू ,एक बार कह जो दिया । तुम केवल एक बार इस पर हाथ फेर सकते हो । इससे ज्यादा नहीं ।" [३] हमें लगता है , एक छोटा-सा बच्चा जेल में है और जेलर उसे खेलने से मना कर रहा है । यहाँ माँ को भी अपने बेटे से प्यार करने की आज़ादी नहीं हैं - " इसके साथ लाड़-प्यार करना हो तो छुट्टी के दिन कर लिया करो । बाकी दिन इसे पड़ा रहने दिया करो ।"[४] पिता का यह क्रूर कथन बेटे के प्रति होते निर्मम व्यवहार का परिचायक है । यहाँ भीष्म जी महानगर की संत्रस्त जिंदगी की वास्तविकता को उकेरने में सफल सिद्ध हुए हैं ।

' साग-मीट ' भीष्म जी की प्रसिद्ध कहानी है । इसमें अमीर परिवारों में अवैध सम्बन्धों की वास्तविकता और देहाती नौकर जग्गे की नमकहलाली को निरूपित किया गया है । जग्गा देहात का रहनेवाला ईमानदार ,विनम्र और नमकहलाल नौकर था | वह साग-मीट बहुत अच्छा बनाता था । कुछ समय बाद वह बीवी ब्याह कर लाता है । जग्गा जहाँ नौकरी करता है ,उस परिवार की गृहलक्ष्मी सुमित्रा (जो इस कहानी की कथा वाचक है) की बातों से पता चलता है कि इस घर में अवैध शारीरिक सम्बन्धों का होना साहजिक और सामान्य समझा जाता है । सुमित्रा का देवर बिक्की दफ्तर से बहाना बनाकर घर आता है और जग्गा की कोठरी में घुसकर जग्गा की पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध जोड़ता है । सुमित्रा यह देख लेती है तो अपने पति से बिक्की की शादी करा देने की बात करती है , तब पति कहता है -" अभी तो इसके मुँह पर से दूध भी नहीं सूखा ... मार ले जितना मुँह मारना है , अभी उसकी उम्र ही क्या है , दो दिन हंस-खेल ले , ब्याह के बंधन में तो एक दिन बंध ही जाएगा | " [५] एक दिन जग्गा बिक्की को अपनी कोठरी से निकलता देख लेता है । वह कोठरी में जाता है । पति-पत्नी में क्या बात हुई कोई नहीं जानता । दूसरे दिन जग्गा ट्रेन के नीचे कूदकर आत्महत्या कर लेता है । सुमित्रा के पति पुलिसवालों एवं जग्गा के घरवालों को पैसा देकर मामला रफा-दफा कर देते हैं ।

‘ लीला नंदलाल की ’ भीष्म जी की एक ऐसी कहानी है , जो पुलिस-तंत्र और न्यायालयों की विसंगतियों को उजागर करती है । दिल्ली में रहनेवाले कथावाचक का नया स्कूटर चोरी हो जाता है | पुलिस में रपट लिखवाई जाती है । फिर पुलिस स्टेशन के चक्कर काटने शुरू हो जाते हैं । वहाँ से एक ही उत्तर मिलता है - ‘ मिलने पर इत्तला कर दी जाएगी । ’ चाचा की सलाह मानकर बीमा कम्पनी से मुआवजा लेने की प्रक्रिया शुरू होती है । वहाँ की प्रक्रिया भी एकदम शिथिल थी । जान पहचान के अधिकारी मोटे नंदलाल की सहायता से मुआवजे का चेक मिल जाता है । कुछ समय बाद पुलिस स्टेशन से चिट्ठी आती है कि तुम्हारा स्कूटर मिल गया है । शिनाख्त कर लीजिए । चिट्ठी में लिखे पत्ते पर कथा नायक पहुँचता है तो एक वैभवी बंगले के बरामदे में कई स्कूटर और गाडियाँ पड़ी हुई थी । एक महाशय बंगले से बाहर निकलते हैं | चिट्ठी देखकर कहते हैं कि स्कूटर शिनाख्त कर लीजिए । इसकी सुपुर्दगी तो पुलिस करेगी । ये महाशय ही चोर थे । कथानायक मुआवजा बीमा कंपनी को लौटाकर अपना स्कूटर वापस लेना चाहता है । यहाँ कथानायक को स्कूटर चोर और पुलिस की साँठ-गाँठ का पता चलता है - “ दूसरे दिन जब मैं पुलिस स्टेशन पहुँचा तो मुझसे रहा नहीं गया । मैंने पुलिस इंसपेक्टर से पूछ ही लिया , ‘ एक बात समझाइए इंसपेक्टर साहब जिस आदमी के बाड़ें में मेरा स्कूटर रखा था उसने मेरे सामने कबूल किया है कि स्कूटर उसीने उठाया था । बल्कि और भी बहुत सी गाडियाँ और स्कूटर उसीने उठाए थे । फिर उसे पकड़ा क्यों नहीं गया ? ’

‘ आप से खुद कहाँ था कि उसने चोरी की है ?’

‘ जी ’

‘ कोई गवाही है आपके पास ? ’

‘ मगर मैं जों कह रहा हूँ कि उसने खुद मुझसे कहा है ? ’

‘ आप सच बोल रहे है मगर कोई गवाही है आपके पास ? ..... अदालत में आपको भी बुलाया जाएगा । आपकी भी गवाही होगी ,बल्कि आपको अपना स्कूटर भी वहाँ पेश करना होगा ।’ [६]

स्कूटर चोर पर मुकदमा चलता है ,पर अदालत में हाजिर ही नहीं रहता । पेशी पर पेशी पड़ती रहती है । स्कूटर मालिक को स्कूटर के साथ हर पेशी पर अदालत पहुँचन पड़ता है ,पर आरोपी बहाने बनाकर हाजिर नहीं रहता । वर्षों तक मुकदमा चलता है ,मेजिस्ट्रेट बदलते रहते हैं । अब स्कूटर काफी पुराना हो जाने पर चलता नहीं । धक्के मारकर या छकड़े पर रखकर स्कूटर अदालत में ले जाया जाता है । स्कूटर चोर चमचमाती कार में घूम रहा है ।

‘ अमृतसर आ गया है ’ भीष्म जी की बहुचर्चित कहानी है | लेखक ने भारत विभाजन की त्रासदी को खुद देखा और भोगा है । अत: विभाजन की विभीषिका को उन्हों ने अपने साहित्य में निरूपित किया है । उनका ‘ तमस ’ उपन्यास इसका सशक्त उदाहरण है । प्रस्तुत कहानी देश के बँटवारे की घोषणा के समय हुए सांप्रदायिक दंगों और धार्मिक वैमनस्य को उजागर करती है । वजीराबाद स्टेशन पर गाड़ी रुकी ,तब पता चलता है कि शहर में काफी मार-काट हुई है । इसी समय एक हिन्दू परिवार गाड़ी के डिब्बे में चढ़ने की कोशिश करता है । अन्य मुसाफिर डिब्बे में घुसने नहीं देते । पुरुष कहता है “ टिकट है जी मेरे पास , मैं बेटिकट नहीं हूँ । लाचारी है । शहर में दंगा हो गया है । बड़ी मुश्किल से स्टेशन तक पहुँचा हूँ । ” [७] लेकिन एक पठान उसे लात मारता है जो उसकी पत्नी के कलेजे पर लगती है । वह इस हिन्दू परिवार को धक्के मारकर नीचे उतार देता है । डिब्बे के मुसाफिर सकते में आ जाते है । दंगों की आग के कारण हर स्टेशन पर सन्नाटा छाया रहता है । कथा वाचक के पास में बैठे दुबले बाबू का ऊपर की बर्फ पर बैठे तीन पठान मज़ाक उड़ा रहे थे । पर बाबू कुछ बोल नहीं पा रहा था । एक पठान द्वारा हिन्दू परिवार को डिब्बे से धकेल देने के बाद वह और ज्यादा सकते में आ गया था । पर अमृतसर आते ही वह उत्तेजित हो कर चिलाने लगता है - अमृतसर आ गया है । वह उन पठानों को गालियाँ देता है ।वह नीचे उतरकर एक लोहे की छड़ ले आता है । पर तीनों पठान समय की नजाकत को देखकर दूसरे डिब्बे में अपने साथियों के पास चले गये थे । पठानों के न मिलने पर बाबू काफी चिल्लाता है , गालियाँ बकता है । फिर आगे किसी स्टेशन पर एक मुसलमान और उसकी पत्नी गठरियों के साथ डिब्बे में घुसने की कोशिश करते हैं । खुदा का वास्ता देकर पुरुष दरवाजा खोलने की बिनती करता है । दुबला बाबू छड़ लेकर उसके पास चला जाता है । दरवाजा खोलकर सीढ़ियों पर खड़े मुसलमान के सिर पर भरपूर वार कर देता है । गाड़ी चलने लगती है ,वह कटे वृक्ष की तरह गिर पड़ता है ,उसकी पत्नी रुक जाती है । लेखक ने इस कहानी में देश का विभाजन होने की घोषणा के बाद हुए दंगों और गाड़ी के डिब्बे में हो रहे विभाजन तथा हिन्दू-सिख एवं मुसलमान मुसाफरों में हो रही प्रतिक्रियों को बखूबी अभिव्यक्त किया है ।

इस प्रकार भीष्म साहनी की कहानियाँ कथ्य-वैविध्य से भरी पड़ी हैं । हर कहानी एक अलग घटना ,एक गहरी संवेदना ,जीवन से जुड़ी कोई समस्या या समाज की किसी विसंगति को निरूपित करती है । यही कारण है कि भीष्म जी की कथा-सृष्टि जितनी व्यापक लगती है , उतनी ही वैविध्यपूर्ण भी ।

संदर्भ- संकेत :

१. मेरी प्रिय कहानियाँ , भीष्म साहनी - पृष्ठ : २२ (राजपाल एण्ड सन्स , दिल्ली)
२. वही ,
३. वही , पृष्ठ : १४१
४. वही , पृष्ठ : १४०
५. वही , पृष्ठ : ८०
६. वही , पृष्ठ : ९६-९७
७. वही , पृष्ठ : ६२